15

अंधेर नगरी

(नाटक)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• संवाद • लोक-संस्कृति संबंधी शब्द-प्रयोग	• नाटक • संवाद	• स्थानीय भाषा • विभिन्न स्थितियों में संबोधनों की पहचान	• विपरीत परिस्थितियों का सामना • विवेक का उपयोग • व्यंग्य एवं आलोचना-क्षमता का विकास

सारांश

नाटक 'अंधेर नगरी' में एक ऐसे नगर का चित्रण है, जहाँ न्याय-अन्याय में फ़र्क नहीं किया जाता। महंत अपने दो चेलों के साथ जिस नगर में पहुँचता है, वहाँ हर वस्तु का भाव 'टके सेर' है। यह देखकर महंत को हैरानी होती है। वह अपने चेलों को तुरंत नगर छोड़ने की सलाह देता है। लेकिन एक चेला गुरु की बात न मानकर उसी नगर में रह जाता है। इस अंधेर नगरी के राजा के राज्य में एक बकरी दीवार से दबकर मर जाती है। फ़रियादी राजा के पास न्याय की आशा लेकर पहुँचता है। राजा के हुक्म के अनुसार बकरी के मरने के लिए ज़िम्मेदार के रूप में क्रमशः कल्लू बनिए, कारीगर, चूने वाले, भिश्ती, कसाई, गड़रिए तथा कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है, लेकिन हर व्यक्ति किसी दूसरे को ज़िम्मेदार बनाकर खुद छूटता जाता है। अंततः गोबरधनदास को पकड़ लिया जाता है। फाँसी के पहले चेला गुरु को याद करता है। महंत आकर गोबरधनदास से गुप्त बातचीत करता है। फिर गुरु चेले में वाद-विवाद होने लगता है। कारण पूछने पर महंत बताता है कि इस शुभ मुहूर्त में जिसे फाँसी होगी, उसे स्वर्ग मिलेगा। यह सुनकर राजा स्वयं फाँसी पर झूलने के लिए तैयार हो जाता है।

मुख्य बिंदु

- यह एक व्यंग्यात्मक नाटक है।
- नाटक के तत्त्व

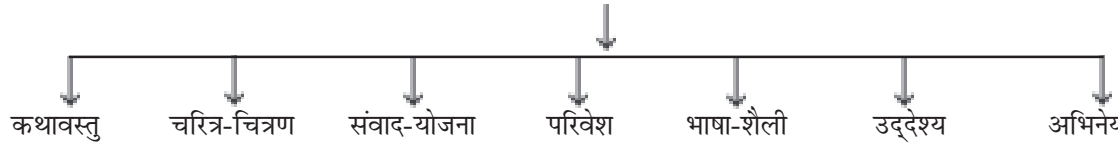

(मंच पर अभिनय किए जाने की क्षमता)

- इस नाटक का उद्देश्य अंग्रेज़ी शासन के अंतर्गत भारत की दुर्दशा को चित्रित करना है।

- अंग्रेज़ों ने अपनी नीतियों से भारत को अंधेर नगरी बना दिया। अंधेर नगरी में न किसी नियम का पालन किया जाता है, न ही कोई जनोन्मुख न्याय-व्यवस्था है।
- इस नाटक के व्यंग्य को स्वाधीन भारत के शासक-वर्ग पर भी लागू किया जा सकता है।
- नगर बाहर से सुंदर तथा अंदर से कुरूप है। ऐसी शासन-व्यवस्था, जहाँ व्यक्ति और वस्तु की कद्र गुणों वेन आधार पर नहीं होती।
- अपने छोटे-मोटे सुखों के कारण व्यवस्था की मनमानी से आँखें नहीं फेरनी चाहिए।
- जो राज धर्म और नीतियों पर आधारित नहीं होता, वह अपने आप नष्ट हो जाता है।

आइए समझें

- इस नाटक में व्यंग्य के माध्यम से शासन की विसंगतियों को बताया गया है।
- यहाँ राजा आत्मकेंद्रित और अन्यायी शासन-व्यवस्था का प्रतीक है, इसलिए उसकी नगरी को अंधेर नगरी कहा गया है।
- अन्यायी राजा के माध्यम से अंग्रेज़ी राज-व्यवस्था की कमियों पर चोट की किया गया।
- जब राजा भ्रष्ट हो जाता है, तो मंत्री, सेठ, अधिकारी, पुलिस आदि भ्रष्ट हो जाते हैं।
- नाटक में लोकभाषा तथा स्थानीय शब्दावली का प्रयोग है। इसकी भाषा खड़ी बोली है, लेकिन ब्रजभाषा का प्रभाव है।
- इस नाटक में छह दृश्य हैं। इनमें जंगल, बाज़ार और राज्यसभा के दृश्य प्रमुख हैं। बाज़ार के दृश्य से तत्कालीन लोक-संस्कृति का पता चलता है।

यह जानना ज़रूरी है

- नाटक में चित्रित शासन-व्यवस्था को वर्तमान संदर्भ में समझना आवश्यक है। राजा-प्रजा का पारस्परिक संबंध न्याय-व्यवस्था पर निर्भर करता है। अगर राजा अन्यायी है, तो प्रजा भी अराजक होती है तथा न्याय ठगा-सा रह जाता है।
- यह नाटक आत्मकेंद्रित, स्वार्थी और अविवेकी शासन-व्यवस्था में रहने वाली जनता की समस्याओं पर लिखा गया है। यह नाटक जनता को शासन की विसंगतियों के प्रति जागरूक बनाता है।
- जो राजा जनता के प्रति संवेदनशील नहीं, उसके राज में सच्चे लोग मारे जाते हैं तथा धूर्त लोग फलते-फूलते हैं।
- अंधेर नगरी का आशय है– ऐसी नगरी, जहाँ तानाशाह की सत्ता है, न्याय का आडंबर होता है और जनता का शोषण किया जाता है। ऐसी नगरी में गुणवान और गुणहीन लोगों में कोई भेद नहीं किया जाता।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

स्थानीय भाषा के शब्द– भिच्छा, टिकस, मुरई, अजीरन, छन, बाजे-बाजे, उपास, न्याव, सोपाड़ी, चाभना, तैंने, दोहाई साइत।

संबोधन

इन संबोधनों और स्थितियों पर ध्यान दीजिए :

(i) बच्चा	–	वत्सलता
(ii) गुरुजी महाराज	–	सम्मान
(iii) बाबा जी	–	आत्मीयता
(iv) महाराज	–	औपचारिकता
(v) क्यों बे	–	अधिकार

नाटक का संप्रेष्य

'अंधेर नगरी' भारतेंदु हरिश्चंद्र का एक व्यंग्यात्मक नाटक है। इसमें अन्यायी शासन-व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर किया गया है। भारतेंदु ने अन्यायी राजा की कल्पना के माध्यम से अंग्रेज़ी राज-व्यवस्था की कमियों पर चोट की है। रचनाकार ने विभिन्न प्रतीकात्मक प्रयोग करके तत्कालीन शासन-व्यवस्था की व्यंग्य रूप में आलोचना की है। न्याय-प्रक्रिया के आडंबर को मनोरंजक तरीके से चित्रित किया गया है।

यह जानना ज़रूरी है

- गोबरधनदास एक ऐसा चरित्र है, जो लालच का शिकार हो जाता है, जिसका दुखद फल उसे मिलता है। गोबरधनदास सुख के लिए गुरु के उपदेश की अवहेलना करता है। वह आम भारतीयों की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है।
- राजा भोग-विलास में डूबा रहता है। वह आत्मकेंद्रित है। उसे जनता की चिंता नहीं है।
- राजा के सलाहकार वास्तविकता जानते हुए भी राजा की चापलूसी करते हैं।

योग्यता बढ़ाएँ

- नाटक की मूल संवेदना तथा कथ्य को समझकर अपने शब्दों में लिखने का अभ्यास कीजिए।
- कथावस्तु एवं पात्रों को वर्तमान संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित करने का प्रयास कीजिए।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- पाठ को कई बार पढ़िए एवं समझिए।
- महत्त्वपूर्ण संवादों को याद कीजिए।
- व्यंग्य के मर्म को समझकर अपने शब्दों में लिखिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   महंत ने नगर छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?

   (क) भिक्षा कम मिलने के कारण

   (ख) पुलिस द्वारा रिश्वत लेने के कारण

   (ग) भावी संकट की आशंका के कारण

   (घ) गोबरधनदास द्वारा निंदा के कारण

2. झूठे इल्ज़ाम में अगर आपका कोई रिश्तेदार गिरफ़्तार हो जाए, तो आप क्या करेंगे– 25-30 शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. अगर आप राजा होते, तो बकरी के मरने का दोषी किसे मानते– 25-30 शब्दों में कारणसहित उत्तर लिखिए।
4. क्या गुणों के आधार पर फ़र्क करना उचित है– 20-25 शब्दों में तर्कसहित अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।